Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

प्रेमचंद: एक महान साहित्यकार के रूप में

Seema*

M.A. B. Ed. Lecturer of Hindi, Singh Ram Memorial Senior Secondary School, Umra, Hisar

शोध-आलेख सार:- ***प्रेमचंद का नाम देदीप्यमान सूर्य की तरह है। यद्यपि वे अब इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनके लेखन कार्य के कारण वे आज भी जिंदा प्रतीत होते है। उन्होंने अपने कार्य से समाज को जो एक नई दिशा दी, उसके कारण उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। उन्होंने हिन्दी साहित्य को अपनी रचना के द्वारा समाज को विभिन्न बुराईयों से सांमतों व पूजींवाद के द्वारा ग्रामीण लोंगो पर किए जाने वाले अत्याचार का आँखो देखा हाल बताया है।***

प्रेमचंद जी हिन्दी जगत के महान साहित्यकार कहे जा सकते है। यदयपि उन्होंने अनेक विधाओं जैसे नाटक, उपन्याए कहानी, निबंध पर कार्य किया है। लेकिन उन्होंने अपने उपन्यासों के द्वारा ग्रामीण लोगों की मनोदशा का वर्णन किया है। उन्होंने ग्रामीण जीवन को निकट से देखा है। वे स्वय भी मध्यवर्गीय समाज से सम्बंध रखते थे। यही कारण है कि जब भी हम उनका कोई उपन्यास या कहानी पढ़ते है तो हमें समाज में घटित हो रही सच्चाई का अनुभव प्रतीत होता है।

मुख्य शब्द - सामंत, सम्पृक्त, संश्लिष्ट, बद्तर, बद्हाली, डयोढ़ी

----------X----------

प्रेमचंद जी का चाहे कोई उपन्यास हो या कहानी, जब भी हम पढ़ते है तो कुछ नया पढ़ने या सुनने को मिलता हैं इस महान साहित्यकार की जितनी प्रशंसा की जाए वो कम है। उन्हें उपन्यास सम्राट की संज्ञा दी गई है।

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी ने 'हिन्दी साहित्य व संवेदना का विकास में लिखा है' "प्रेमचन्द हिन्दी उपन्यास की व्यस्कता की प्रभावशाली उद्घोषणा है। सामाजिक यथार्थ की जिस समस्या को उनके पूर्ववती उपन्यासकारों ने आदर्श व यथार्थ के खानों में बाटंकर देखा था उसे प्रेमचंद सम्पृक्त व संश्लिष्ट रूप में समझते है।"1

यदि वर्तमान समय की बात की जाए तो प्रेमचंद के उपन्यास आज भी महत्त्वपूर्ण है। अब जबकि प्रेमचंद के समय और अब के समय में बहुत अन्तर आ चुका है, तब भी उनके उपन्यासों का रूप वर्णहीन नहीं हुआ है। प्रेमचंद जी सदा से भारतीय जनता के हितैषी रहे है। उनका मुख्य उद्देश्य ही जनता की आवाज को ऊपर उठाना था। उन्होंने अपनी आवाज को अपने लेखन कार्य से समाज के बीच पहुँचाई है। प्रेमचंद जी ने महसूस किया कि भारतीय गरीब किसान दिन-रात खेती करता है लेकिन फिर भी वह भूखा सोता है। उसके बीवी-बच्चे कौड़ी-कौड़ी के लिए मोहताज हो जाते है। पूंजीवाद व सांमती व्यवस्था उनका खून-चूसकर चैन की नींद सोती है। सांमतवाद तरह-तरह से उनका शोषण करती है।

प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास 'गोदान' में किसान की बेबसी का बहुत ही दयनीय चित्रण किया है। इस उपन्यास में प्रेमचंद जी किसान और जमींदार का शोषण ही नहीं दिखाया बल्कि समाज में बदलते आर्थिक ढांचे का सुन्दर वर्णन भी किया है। प्रेमचंद के 'गोदान' ने भले ही संघर्ष की भावना उत्पन्न न की हो लेकिन इस उपन्यास से किसान की नई एंव जवान पीढ़ी धीरे-धीरे जागृत हो रही है। 'गोदान' का नायक होरी के पुत्र में हम प्रगतिशील चेतना भली-भांति देख सकते हैं। उपन्यास के आरंभ में ही उसकी विद्रोही-वृति का पता चलता है, जब वह अपने पिता से कहता है - "यह सब मानने की बातें हैं। भगवान सबको बराबर बनाते है। यहां जिसके हाथ लाठी है, वही गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।"2

वर्तमान समय में भी किसान की दशा में कोई विशेष बदलाव नहीं आया है। आज भी किसान पूंजीवाद का पूरी तरह विरोध नहीं करता। पूंजीवाद व्यवस्था लगातार उनका शोषण करती है जिसके फलस्वरूप उनका जीवन बद्तर बना हुआ है। किसान समाज का एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है। यदि किसान मेहनत नहीं करेगा तो हमें खाने का एक दाना तक नहीं

www.ignited.in

मिलेगा। किसान की स्थिति हमारे समाज की आर्थिक स्थिति को मापते है।

इस संदर्भ में डॉ. रामवक्ष अपनी पुस्तक ''प्रेमचंद और भारतीय किसान'' में लिखते है कि -''प्रेमचंद और भारतीय-किसान'' में लिखते है कि, ''किसान समाज का आधार होता है। समाज का उत्पादक वर्ग किसान है, उसी की उन्नति से देश की उन्नति संभव है। उसकी बदहाली देश की बद्हाली।''3

स्त्री सदा सही उपेक्षित रही है। प्राचीन काल से ही उसे वो दर्जा नहीं मिल रहा जिसकी वो हकदार है। अनेक साहित्यकारों व समाज-सुधारकों ने स्त्री की दशा को सुधारने का कार्य किया। लेकिन जो कार्य प्रेमचंद जी ने किया वैसा करना सब के वश की बात नहीं। प्रेमचंद ने निर्भीक होकर अपने लेखन में स्त्री पर हो रहे अत्याचारों को खुलकर वर्णन किया है। उन्होंने समाज में हो रहे अनमेल विवाह, दहेज-प्रथा पर बहुत कुछ लिखा। उन्होंने अपने लेखन की मदद से स्त्री को मुक्त कराने की सोची। उन्होंने अपने उपन्यास ''सेवासदन'' में दर्शाया है कि किस प्रकार नारी को परिवार वालों की बातें मानकर बिना पसंद के दूल्हे से शादी करनी पड़ती है उसे सदा एक गुलामी की जिदंगी गुजारनी पड़ती है। इस रचना में प्रेमचंद जी ने विपरीत परिस्थितियों से मजबूर होकर हालात से सौदा करने वाली लड़की की कथा कही है।

''सुमन का जीवन नारी पराधीनता की एक मिशाल है और जब वह ड्योढ़ी से पाँव निकालने की कोशिश करती है तो उसे कुलटा मानकर उसका पति उसे घर से बाहर निकाल देता है। सुमन घर नहीं लौटती बल्कि वैश्या बन जाती है''।4

प्रेमचंद ने अपने उपन्यास ''गबन'' में जालपा की मदद से पति के लिए सर्वस्व त्यागने, तो दूसरी और क्रांतिकारी होना दिखाया है। प्रेमचंद जी का मानना है कि स्त्री सबल चरित्र का उदाहरण है, जो बिना किसी झगड़े से जिदंगी को जद्दोजहद से जुझती है और अपनी सूझ-बूझ से रास्ता अख्तियार करती है। 'गोदान' उपन्यास से 'धनिया' के माध्यम से सशक्त इरादे को निडर और धीरज रखने वाली स्त्री का चित्रण किया है जो विपरीत परिस्थितियों में विरोध व विद्रोह का साहस रखती है। प्रेमचंद जैसे अनमोल साहित्यकार ने ही समाज को दहेज-प्रथा से होने वाले नुकसान के बारे में बताया। ''वे अपने पाठकों को बार-बार याद दिलाते रहते है कि दहेज के कारण आज हमारे समाज में स्त्रियों की दुर्दशा हो रही है और उनकी जीवन नरक से भी बद्तर होता जा रहा है।''5

प्रेमचंद जी ने उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो दहेज लेना तो चाहते है, ऊपरी मन से मना करते है।

प्रेमचंद उन लोगों को ज्यादा खतरनाक मानते है जो शादी के वक्त तो यह कहते है- ''आपकी खुशी हो दहेज दें या न दें, मुझे इसकी परवाह नहीं, हाँ बारात में जो लोग जाएं, उनका आदर-सत्कार अच्छी तरह होना चाहिए, जिसमें मेरी और आपकी जगह साईं न हो।''6

इस महान साहित्यकार के योगदान की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है। उनके हिन्दी लेखन के योगदान से ही स्त्री की दशा कुछ सुधर पाई हैं। लेकिन वर्तमान में अब भी समाज में पुरूष की प्रधानता है। चाहे कोई भी कार्यक्षेत्र हो पुरूष को ही स्त्रियों के मुकाबले ज्यादा वरीयता दी जाती है। आज सरकार और शिक्षा प्रणाली महिला को समाज की मुख्यधारा में लाने का भरसक प्रयत्न कर रही है परंतु पुरूष मानसिकता को बदलने में सब नाकाम है।

प्रेमचंद जैसे महान लेखक हिंदी-साहित्य की धरोहर है। हिंदी जगत में प्रेमचंद जी का वही स्थान है जो स्थान सूर्य का आकाश में है। इस साहित्यकार ने कथा-साहित्य के निर्माण व विकास में अपना सब कुछ न्योंछावर कर दिया। उनके उपन्यास भारतीयों की आत्मा है। प्रेमचंद जी केवल साहित्यिक प्राणी ने थे बल्कि उनके लेख का विषय सामाजिक विमर्श और तत्कालीन समस्याएँ रहा।

संदर्भ

1. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं. 1993, पृ0 164
2. डॉ. उषा ऋषि, प्रेमचन्द और उनके उपन्यास, मूल प्रकाशक पृथ्वीराज पब्लिशर्स नई दिल्ली, पृ0 229
3. प्रेमचंद और भारतीय किसान- राजवक्ष, पृ0 176
4. विशेष अध्ययन-प्रेमचंद, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा परिषद, नई दिल्ली, पृ0 60
5. उपरोक्त, पृ0 38
6. उपरोक्त पृ0 40

Corresponding Author

Seema*

M.A. B. Ed. Lecturer of Hindi, Singh Ram Memorial Senior Secondary School, Umra, Hisar

ranimakkar89@gmail.com